पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 60-71

"शव काटने वाला आदमी" में अभिव्यक्त मनपा समाज और संस्कृति

✍ डॉ. चुकी भूटिया

पूर्वोत्तर स्थित राज्य अरुणाचल प्रदेश में करीब छब्बीस जनजातियाँ निवास करती हैं। सबकी अपनी भाषा और संस्कृति है। यहाँ की मनपा और सेरदुकपेन जनजातियाँ भी अरुणाचली संस्कृति के निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह करती आ रही हैं। इस क्रम में येशे दोरजी थोंगछी एक ऐसे रचनाकार हैं जो हैं तो अरुणाचल के, लेकिन अपनी रचनात्मक उर्जा को असमीया भाषा और साहित्य के बलबूते पर अरुणाचल की जनजातीय संस्कृति को उकेरने का काम कर रहे हैं। वे स्वयं सेरडुकपेन जनजाति से सम्बद्ध हैं। उनका नाम असमीया साहित्य और पूर्वोत्तर के साहित्यकारों में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। 'सोनम', 'मौन ओंठ मुखर ह्रदय' और 'श कटा मानुह' जैसे महत्वपूर्ण उपन्यास उनकी रचनात्मक उर्जा के प्रमाण हैं। प्रस्तुत लेख में उनके उपन्यास 'श कटा मानुह' के हिन्दी अनूदित रूप 'शव काटने वाला आदमी' में अभिव्यक्त मनपा समाज एवं संस्कृति की पड़ताल की गयी है।

मनपा और सेरदुकपेन जनजातियों में काफी समनाता है। येसे दोरजी थोंगछी को तवांग में लगभग तीन वर्षों तक उपायुक्त के पद पर कार्य करते हुए मनपा जनजाति के मध्य रहने और उन्हें करीब से जानने का अवसर प्राप्त हुआ था। मनपा जनजाति और उनके शव काटने की प्रथा पर लिखने की प्रेरणा उन्हें वहीं से मिली। उपन्यास की भूमिका में उन्होंने इस बात की पुष्टि की है कि इसकी कथा काल्पनिक है, परन्तु उपन्यास के कुछ पात्र ऐसे हैं, जिनकी सत्ता मौजूद हैं। उनमें दलाई लामा, तवांग के तत्कालीन एडिशनल पॉलिटिकल ऑफिसर श्री टी. के. मूर्ति और आर्मी कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल निरंजन प्रसाद आदि प्रमुख हैं। इनके अलावा अन्य सभी पात्र उनकी कल्पना से निर्मित हैं। उपन्यास की कथा को ऐतिहासिक स्वरूप देने के लिए लेखक ने कुछ ऐसी घटनाओं का भी चित्रण किया है, जो

तत्कालीन समय में घटी थीं। जैसे, तवांग में भूकंप के आने से मची तबाही में मनपा जनजाति किस तरह प्रभावित होती है? तिब्बत में चीन का शासन लागू होने के साथ बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का तवांग के रास्ते भारतीय भूमि में प्रवेश करना, दलाई लामा द्वारा दिरांग में कालचक्र पूजा का आयोजन करना एवं 1962 का वह वर्ष, जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था,उस युद्ध की विभीषिका का मार्मिक चित्रण रचनाकार ने उपन्यास में किया है। इसके पश्चात् लेखक ने उपन्यास के नायक दारगे नरबू के सहज सरल जीवन का नक्शा बदलता हुआ दिखाया है। कई स्थानों पर फ़्लैशबैक शैली का प्रयोग करने के कारण कथा में नाटकीयता और रोचकता बन पड़ी है।

दारगे नरबू को दिरांगजंग गाँव और समूचे जिले में आउ थांपा, आजांग थांपा, आपा थांपा के नाम से जाना जाता है। मनपा भाषा में आउ का अर्थ बड़ा भाई, आपा का अर्थ पिता और आजांग का अर्थ मामा होता है तथा थांपा शव काटने वाले आदमी को कहा जाता है। वह अपने समुदाय और जिले में इसी नाम से प्रसिद्ध था। उसका काम अब उसके नाम से यूँ चिपक गया था कि कोई उसे उसके असली नाम से नहीं जानता था, यहाँ तक कि वह स्वयं भी अपना नाम भूलने लगा था। वह अपनी पत्नी और विकलांग बच्ची के साथ वहाँ रहता था। उसने अपने पिता और मामा से शव काटने की कला सीखी थी और उसी को अपने जीवन की पहचान बना चुका था। दारगे नरबू का जीवन हमेशा से ऐसा नहीं था, आम व्यक्ति की तरह उसका भी जीवन था, परन्तु भारत चीन युद्ध के बाद उसमें ऐसे मोड़ आ गये, जिन्होंने जीवन की सरसता को निचोड़ लिया था। जब तवांग की शासन-व्यवस्था चीन के हाथों से निकल कर भारत सरकार को हस्तांतरित हुई, तब वहाँ भारतीय सेनाओं ने अपनी शक्ति का विस्तार करना प्रारम्भ किया, ताकि युद्ध की स्थिति में चीन का मुकाबला कर सकें। भारतीय प्रशासन की जड़ों को मजबूत बनाने के लिए वहाँ नये प्रशासनिक केन्द्र खोले गये। इस प्रक्रिया में वहाँ की जनजाति समुदाय किस तरह शरीक होते हैं और भारत सरकार के लक्ष्य की प्राप्ति में अपनी सहभागिता दर्ज करते हैं, इसका वर्णन किया गया है। भारत सरकार की सेनाओं का बोझा ढोने का काम मनपा जनजातियों को करते दिखाया गया है। दारगे नरबू और उसके साथी भी इस कार्य में सक्रिय हैं। भारत-चीन के मध्य अचानक युद्ध प्रारम्भ होता है और भारतीय सेनाओं की मदद में लगे दारगे नरबू और उसके मित्र युद्ध की चपेट में आ जाते हैं। दारगे नरबू अपने परिवार और प्रेमिका रिनचेन रिजोम्बा के साथ जीवन के

उबड़-खाबड़ रास्ते पर भी सुख-चैन से समय व्यतीत कर रहा था कि युद्ध के आरम्भ के साथ उसकी जिन्दगी पूरी तरह बदल जाती है। उसकी आँखों के सामने उसके सारे मित्र मारे जाते हैं, रिजोम्बा को खोने का दर्द उसे झेलना पड़ता है। ऐसी स्थिति में उसका मानसिक संतुलन बिगड़ता है। प्रेमिका की फटी दोतुंग उसके हाथ आती है और फिर एक ऐसी वीभत्स लाश, जिसका चेहरा दुश्मनों ने पूरी तरह से बिगाड़ दिया था। सुन्दर सौम्य चेहरे का यह वीभत्स रूप उसकी आँखों से अलग नहीं हो पाता और स्मरण करने के बावजूद रिजोम्बा का असली चेहरा वह याद नहीं कर पाता। वह भयानक तस्वीर उसके मनोजगत में इस कदर जम जाती है कि चेष्टा करने पर भी अपनी प्रेमिका को उसके मूल स्वरूप में याद नहीं कर पाता। युद्ध की भीषण स्थिति और आदिवासी समुदायों की सरलता और सहजता का चित्रण किया है। सहज-सरल आदिवासी समाज के लोगों के जीवन में युद्ध का आतंक और उसके भीषण परिणाम को स्वीकार कर पाना आसान नहीं होता है। दारगे नरबू अपना मानसिक संतुलन खोता जाता है। एक समय ऐसा आता है जब वह अपनी बीमार जीवित माँ को मुर्दों के समान काट देता है। तेजपुर के मानसिक चिकित्सालय में उसका इलाज शुरू होता है, फिर जैसे अपने गाँव के अपने लोगों से उसका हमेशा के लिए संबंध टूट जाता है। गाँव-घर में अब लोग उसके नाम से डरा करते हैं।

तत्कालीन राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों के कारण एक सीधे व्यक्ति के जीवन में आये झंझावातों के बाद वह पुन: सामान्य जीवन में नहीं लौट पाता, जबकि उसका कोई कसूर नहीं है, वह वक्त का मारा है। थाम्पनाग स्थान दिरांगजंग गाँव से कुछ दूरी में बसा हुआ है। दारगे नरबू अपनी पत्नी गुईसेंग्मु और बेटी रिजोम्बा के साथ उपेक्षित सा वहाँ जीवन व्यतीत करता है। उसके भयानक अतीत और वर्तमान में उसका काम उसे सामान्य व्यक्ति की तरह जीने नहीं देता। वह सदैव नशे में धुत रहता, घर परिवार के प्रति पूरी तरह लापरवाह, पत्नी और बच्चे उसकी हरकतों से परेशान रहते। पत्नी ताने देती, भला बुरा कहती; पर दारगे नरबू के ऊपर उसका कोई असर नहीं होता। पत्नी प्रसव-वेदना से गुजर रही थी और दारगे नरबू शव काटने के काम से फुरसत पाकर नशे में धुत होकर घर ही नहीं पहुँचता था। जीवन की ठोकरों से उस का चरित्र बिलकुल डगमगाया हुआ दिखायी देता है। वह अपने में ही सिमटा, अपने स्वार्थों में बंधा, शराब, शव काटने और काम वृत्ति को शांत करने के अतिरिक्त वह कुछ सोच ही नहीं पाता था। उसे पत्नी की चिंता नहीं है? बच्चे के विषय में जानने

की उत्सुकता नहीं है। जीवन और परिस्थितियों की मार से जैसे उसके भीतर का सब-कुछ सूख गया हो! उसकी आत्मा जैसे मर चुकी हो। हाँ,जीवन के कठोर क्षणों से पलायन कर वह अतीत की स्मृतियों में गुम होना पसंद करता है। क्योंकि वहाँ वह उस अतीत को पा जाता है जो कभी उसके जीवन का हिस्सा बनते-बनते छूट गया हो! दारगे नरबू की पत्नी गुईसेंग्मु उसकी आदतों से चिढ़ी रहती है। 'तुम्हारी तरह बेकार, निकम्मा आदमी मैंने धरती पर दूसरा नहीं देखा। पत्थर जैसा तुम्हारा दिल है, कोई लगाव नहीं, चेतना नहीं, चिंता नहीं। लाशें काटते काटते तुम्हारा दिल भी मरे हुए आदमी के दिल की तरह बन चुका है, लज्जा नहीं, शर्म नहीं।"

जीवन में मिले आघातों ने दारगे नरबू को मानसिक असंतुलन का शिकार बनाया, तो व्यवसाय ने उसे और ज्यादा जड़ बना दिया था। यद्यपि बौद्धों में यह आस्था और विश्वास है कि एक शव काटने से एक तीर्थ भ्रमण का पुण्य प्राप्त होता है, परन्तु यह कार्य करना कठिन है। एक सामान्य मनोवृत्ति का आदमी इस कार्य को सहजता से निभा नहीं सकता, दारगे पर एक ओर आस्था और परम्परा का दबाव है, तो दूसरी ओर अपने पूर्व कर्मों के प्रति ग्लानि का भाव-बोध भी। सड़ी-गली लाशें काटने के लिए शराब पीना अत्यंत जरूरी हो जाता है।

उपन्यास में दारगे नरबू के अलावा पत्नी गुइसेंग्मु, गूँगी बेटी रिजोम्बा, पिता देछिन, माँ दोरछोम, बुआ सेंगछोम, फूफा लेकी, रिनचिन जोम्बा, गम्बू , जिगमे, सातवें दलाई लामा, आने सांगे नोरलजोम, चोरगेन जामबे, आपा चोरगेन कारमा थिनले, आने द्रोमा, गरचूँग, वांगजम, टासी, दंदू, मेजिस्ट्रेट साहब, एसिस्टेंट पोलिटिकेल ऑफिसर मि. मूर्ति, चोरगेन सांगे इत्यादि पात्र हैं। गुइसेंग्मु दारगे का चरित्र स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाली साहसी महिला के रूप में निर्माण हुआ है। अपने परिवार की रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करती हुई मेहनत और श्रम के महत्त्व से परिचित गुइसेंग्मु का चरित्र बहुत ही मजबूत है, जो आदिवासी स्त्रियों का वैशिष्ट्य भी है। आदिवासी समाज की महिलाएँ नाजुक, ड्राइंग रूम की सजावट बनने वाली नहीं, बल्कि जीवन संघर्ष में निरंतर जूझने वाली होती हैं। लेकिन परिवार की चिंता से बेखबर दारगे नरबू का व्यवहार गुइसेंग्मु को चिढ़चिढ़ा बना देती है और उस अवस्था में अपने पति से कहने को वह विवश होती है, "अगर तुम्हें इसी तरह का घिनौना काम करना पसंद था

तो तुम नीच 'खेतपा 'बनकर क्यों पैदा नहीं हुए?"[4] गुइसेंग्मु के वक्तव्य से स्पष्ट है कि आदिवासी समाज में भी जातिगत भेद देखने को मिलता है; पर कर्म के आधार पर यह विभाजन है, समाज में उनके मध्य किसी तरह का कोई भेदभाव देखने को नहीं मिलता, सभी जातियाँ समरस भाव से एक दूसरे का सहयोग करती दिखेंगी।

कई दफा गुइसेंग्मु यह सोचती है कि पति को छोड़कर कहीं चली जाए पर सम्बन्धों की गाँठ को आसानी से तोड़ नहीं पाती; जबकि वह जानती है कि दारगे जैसे अकर्मण्य, शराबी पति के न रहने पर भी वह अपने परिवार का गुजारा कर सकती है। उसे अपनी विकलांग बेटी की चिंता रहती है, उसके न रहने बाद की चिंता उसे सताए रखती है, पिता अपने फर्ज से विमुख अलग ही दुनिया में व्यस्त है; परन्तु ज्यादा दिनों तक गुइसेंग्मु को निराश नहीं होना पड़ता। पिता का मन अपनी बेटी की तरफ फिरता है। मैले कुचेले रहने वाला शराबी दारगे नरबू जिसको परिवार समाज का कोई महत्त्व नहीं, जो शव काटते-काटते उसी भाँति निष्ठुर हो गया था, जो केवल गाली गलौच करना जानता था, उसके जीवन में आकस्मिक परिवर्तन होता है। अपने ऊपर आये संकट की घड़ी में गाँव वाले और अपनी पत्नी को अपने पक्ष में जब वह खड़ा पाता है, तब उसे अपने समाज और घर-परिवार के महत्त्व का अहसास होता है। अतीत की स्मृतियों से बाहर निकल कर दारगे अपने वर्तमान को स्वीकार करने की दिशा में प्रवृत्त होता है। लगातर अपने द्वारा दुर्व्यवहार करने के बावजूद भी संकट की घड़ी में समाज और उसकी पत्नी जिस सहृदयता का परिचय उसके देते हैं, यह दृश्य उसके अंतर को बदलने के लिए विवश करता है और पश्चताप की अग्नि में जलते हुए अपनी बेटी और पत्नी से अपने सम्बन्धों में सुधार लाने का प्रयत्न करता है, जहाँ वह सफल भी होता है।

उपन्यास में कड़ी मेहनत और श्रम करती गुइसेंग्मु के जीवन में दारगे का बदलना एक सकारत्मक उर्जा लेकर आता है। आदिवासी समाज सामूहिकता में आस्था रखता है और व्यक्ति विशेष की जिन्दगी में जब कोई संकट आता है, तो उसे दर्शक की भाँति देखता नहीं है और यह सोचकर निश्चिन्त नहीं होता कि उसका जीवन सुरक्षित है; बल्कि उस व्यक्ति को मुश्किल से उभारने का सफल प्रयास करता है। ज्ञान और अज्ञानता के बीच झूलता, अन्धविश्वास के फेर में पड़ा आदिवासी समाज इतना तमीजदार तो है ही

कि मुसीबत में पड़ी अनजान आवाज को खोजता हुआ मदद के लिए पहुँच जाता है। इसका सुन्दर वर्णन लेखक ने किया है।

स्त्री और पुरुष में समानता आदिवासी समाज की विशेषता है। वहाँ स्त्री और पुरुष के मध्य किसी तरह कोई विभाजन रेखा नहीं होती, स्त्री पुरुष दोनों ही परिवार की जिम्मेदारियों का समान भाव से वहन करते हैं। पूर्वोत्तर के राज्यों पर अक्सर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वहाँ का समाज काफी स्वछन्द है, पारिवारिक कलह में घर तोड़ कर बहुत सहजता से स्त्रियाँ बढ़ जाती हैं; पर इस स्थिति को लेखक ने बहुत सुन्दर ढंग से उपन्यास में प्रस्तुति दी है। अपने पति को हर परिस्थिति में निकम्मा पाकर भी गुइसेंग्मु उसका साथ छोड़ने की हिम्मत नहीं कर पाती। कहीं स्वच्छन्द स्त्रियों के चित्रण का मुद्दा उठता है, तो वह केवल आदिवासी समाज में नहीं होता, अपवाद हर समाज में घटता है। स्त्री कहीं किसी मायने में पुरुष से कम नहीं है, बल्कि वह उसके बराबर घर और बाहर तालमेल बनाकर चलने का सामर्थ्य रखती है। इस बात को बहुत सुन्दर ढंग से लेखक ने इस उपन्यास में चित्रित किया है।

पहाड़ों में बसने वाले आदिवासियों का जीवन सरल और सहज नहीं होता, वे जीवन में कठिन से कठिन श्रम करने से कभी नहीं हिचकते हैं। मनपा समाज के लोग भी अपने अस्तित्व और अपनी जीवन को ढर्रे पर लाने में सदैव मशक्कत करते रहते हैं। पूर्वोत्तर के पहाड़ी इलाकों में मैदानी क्षेत्रों की भाँति रोजगार के साधन उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में यहाँ बसने वाले लोगों को सरकारी नौकरी और कृषि कार्य में ही अपने को जोड़े रखना पड़ता है। वैज्ञानिक विकास के इस दौर में मनपा समाज में व्याप्त अंधविशवासों को अनेक उदाहरणों के माध्यम से लेखक ने चित्रित किया है। दारगे नरबू की विकलांग बच्ची की चिंता माता-पिता को बनी रहती है। उसका संतुलित विकास नहीं हो पाया है, उसकी विकलांगता के पीछे के कारणों की पड़ताल करने के बजाय लोगों का मानना है कि दारगे नरबू की पत्नी जब प्रसव पीड़ा से गुजर रही थी, उस समय वांगागांजंग से लौटते हुए तीर्थयात्रियों की सड़क हादसे में जो मौतें हुई थीं, दारगे नरबू उनके शव काटने के काम में व्यस्त था। उन प्रेतात्माओं के प्रभाव स्वरूप वह मंद बुद्धि वाली पैदा हुई। एक ओर जहाँ इस बात में आस्था व्यक्त हो रही है कि शव काटना तीर्थ भ्रमण के समान है, वहीं प्रेतात्माओं के प्रभाव से शव काटने वाले आदमी का इतना अनर्थ होना दो विरोधात्मक स्थितियाँ हैं। अपनी बीमार बेटी का इलाज डॉक्टर के पास कराना चाहिए इस विषय में न सोचकर दारगे

नरबू उसे तीर्थ भ्रमण की ओर ले जाना चाहता है, दान दक्षिणा, पूजा-पाठ करने की सोचता है, ताकि उसका पाप कुछ कम हो और बिटिया ठीक हो जाएँ। यहाँ साफ है कि धर्म से मनपा जीवन को कितना प्रभावित है। वे जीवन में आने वाली समस्याओं को वैज्ञानिक तरीके से समझने के स्थान पर धर्म और आस्था का सहारा लिए हुए हैं और उसी के सहारे वे अपनी बिटिया का इलाज करने की सोचते हैं। पुण्य, धर्म और संस्कारों में अत्यधिक आस्था के कारण अक्सर इलाज होने योग्य स्थिति भी लाइलाज हो जाती है। यहाँ आदिवासी समाज अंधविश्वास की हद तक धार्मिक है, इसका सूचक है। "मनपा लोग निरीह और शांत होते हैं, वे युद्ध, बन्दूक ,सिपाही, हत्या आदि शब्दों से परिचित नहीं हैं।"[5] उपन्यास की कथा इस बात का सूचक है कि उनका जीवन बहुत सामान्य होता है और मुख्यधारा के समाज से कई दृष्टि में भिन्न भी। छल कपट और लोभ जैसी स्थिति मनपा समाज में नहीं है। दारगे नरबू का जीवन और उसका व्यक्तिगत व्यवहार गाँव वालों को मुसीबत की स्थिति में अलग नहीं रहने देता, बल्कि वे अपने सारे गिले-शिकवे ताक पर रखकर उसकी मदद में उठ खड़े होते हैं। सामाजिक भाव, परपीड़ा की चिंता वहाँ एक दूसरे को प्रभावित करती हैं।

'शव काटने वाला आदमी' उपन्यास में मनपा समाज की सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति पर लिखने के क्रम में मनपा आदिवासियों में अराक सेवन, वान्जांग सेवन का खूब उल्लेख हुआ है। लोसर उत्सव का भी उल्लेख मिलता है। लोसर पर्व के अवसर पर बनाये जाने वाले खापसी का जिक्र हुआ है। मनपा जन अपने पर्व और त्योहार का आरम्भ समाज और परिवार के वरिष्ठ व्यक्ति को भेंट अर्पित कर करते हैं। ऐसा सभी आदिवासी समाजों में देखने को मिलता है। पर्व उत्सव के समय नये कपड़े पहनते हैं, लड़कियों के वस्त्र आदि के नामों का उल्लेख भी इस उपन्यास में किया गया है। चोरगेन कर्मा थिनले की श्री वृद्धि में विस्तार और उनके सम्मान से साफ स्पष्ट है कि समाज में उन व्यक्तियों को पूछा जाता है, जो शक्तिशाली और सामर्थ्यवान हैं। हाँ, उनकी चाटुकारिता में अपनी आत्मसम्मान तक को दांव पर लगा देने वाली स्थिति मनपा समाज में नहीं है।

मनपा जन के समूह जाब्रो नृत्य गीत का नाम भी इसमें आया है। कालचक्र धार्मिक महोत्सव, बौद्धों के लिए यह एक बड़ा पर्व है, जहाँ व्यक्ति अपने पापों को धुलता हुआ महसूस करता है और अपने भीतर पवित्रता का अनुभव करता है। बौद्धों के द्वारा पूजा के अवसर पर

प्रयोग में लिए जाने वाले रोडिंग, जालिंग जैसे वाद्ययंत्रों के नाम भी इसमें आये हैं। मनपा समाज में एक बेटे को लामा बनाने और उसे मठ में भेजने की प्रथा का भी उल्लेख हुआ है। अक्सर यह मझले बेटे के हिस्से आता है। उपन्यास में भी रिजोम्बा का मझला भाई टाशी बौद्ध भिक्षु बनने के लिया जाता है। "अगर किसी परिवार से कोई जाना या भेजना नहीं चाहते तो उसके लिए उन्हें तवांग गुम्पा में रब्रीई या कर देना पड़ता है और अपनी असमर्थता के लिए माफी मांगनी पड़ती है।"[6] जाहिर है, मनपा जनजातियों के जीवन को नियंत्रित और संचालित करने में उनके धर्म और आस्था की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

मनपा जनजाति में स्त्री और पुरुष के शव काटने की प्रक्रिया में अंतर को बहुत स्पष्ट ढंग से चित्रित किया गया है। स्त्री और पुरुष सामाजिक स्तर पर समान होते हैं, पर दोनों के संस्कारों में भेद हैं। बौद्ध धर्म में कोई भी शव काटने का अधिकारी नहीं हो जाता है, उसके लिए मृतक और काटने वाले व्यक्ति की कुंडली और राशि का मिलन किया जाता है। अगर दोनों मिल जाते हें, तभी उसे काटने का अधिकार प्राप्त होता है। किसी की मौत होने पर 'मो' देखा जाता है, जिसके माध्यम से पता चलता है कि मृतक की अंतिम क्रिया कब और कैसे की जाए? शव काटने की प्रक्रिया से जुड़ने के बाद उन हाथों का प्रयोग वह खाने में तब तक नहीं कर सकता है, जब तक उसे गर्म पानी में नमक के साथ नहीं धो लेता है। शुद्ध और विज्ञान की भाषा में कहें तो हाथों को कीटाणु मुक्त करना आवशयक होता है। समाज में बड़े ज्ञानी और कर्म से वरिष्ठ व्यक्ति की मौत होने पर उनके सर को नदी में नहीं बहाते बल्कि जमीं में दफनाकर रखा जाता है, साल भर बाद श्राद्ध के समय पूजा विधि के पश्चात् उसकी कपाली का इस्तेमाल पूजा के निमित्त किया जाता है। उन्हें अच्छा माना जाता है, क्योंकि धार्मिक मनोवृत्ति से संचालित उच्च और बेहतरीन को सदैव पूजा योग्य और ग्राह्य समझता है। बौद्धों में शव काटने के सम्बन्ध में जो प्रचलित आस्था है, उसे निरपेक्ष भाव से बताने का प्रयास किया है। उपन्यास में दारगे नरबू के शव काटते समय के मनोविज्ञान और उसकी मानसिक अवस्था का बहुत सटीक वर्णन हुआ है। उपन्यास का शीर्षक 'शव काटने वाला आदमी' बहुत भयावह बिम्ब देता है, जब किसी ने लेखक से यह प्रश्न किया तो उनका सहज उत्तर था "यह 1962 की कथा है, यह आसान कैसे हो सकता था। अरुणाचल में कुछ भी आसान नहीं है। उनका धर्म, आस्था, संस्कृति, परम्परा लोक, इतिहास और कथाएँ ईसाइयत के तीव्र प्रवाह में दब रही है, बदल रही है। जमीं गाँव और मानस

से पुस्तकों में बंद हो रही है। कोई उनको नहीं सुनेगा। पार्टी कोई भी हो हम सब अपने अपने विनाश और लुप्त होते जाने के वृतांत लिखने में सिद्धहस्त हो गए हैं।"[7]

उपन्यास में छोटी-छोटी कथाएँ, एक-दूसरे से जुड़ते हुए मूल कथा की ओर बढ़ती हैं। धार्मिक पथ पर अग्रसर अनी सांगे का दारगे के प्रति प्रेम में पुनः कमजोर पड़ जाने की स्थिति से पाठक के भक्ति रस में व्यवधान उत्पन्न होता है। दारगे सामान्य व्यक्ति होकर भी अनी सांगे के रूप में अपनी बिछुड़ी प्रेमिका को पाकर अपनी चेतना में संयम ले आता है और अपने और प्रेम के बीच धर्म और विश्वास की मौजूद दीवारों को लांघने की सोचता तक नहीं है, जबकि अनी सांगे वह संयम नहीं दिखा पाती।

सत्ता का धर्म जैसे-जैसे आदिवासी समुदायों के मध्य अपना प्रसार कर रहा है, युवा वर्ग अपनी आदिवासियत से दूर हो रहे हैं। उनका सरल-सहज मानवीय धर्म संकट की स्थिति महसूस कर रहा है। आधुनिकता के इस दौर में भूमंडलीकरण जैसी धारणाओं ने विश्व को एक गाँव में परिणत कर दिया है। ऐसे में आदिवासी समाज की संस्कृतियाँ लुप्त न हो जाए, कथा-कहानियों की बातों तक न रह जाएँ, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लेखक ने अपने समय को जीवित रखने का प्रयास किया है। मनपा समाज की संस्कृति विस्मृति का शिकार न हो जाएँ, उनके संस्कार को लेखक ने साहित्य के माध्यम से जीवित करने का प्रयास किया है। मनपा समाज के शव के प्रति धारणा को देख समाज का कोई वर्ग घृणा से उन्हें पाशविक और न जाने किन संज्ञाओं से विभूषित कर सकता है। इस संकीर्ण मनस्थिति को वे नहीं सोचते बल्कि वह केवल इतना जानते हैं कि बदलते समय में अपनी आस्थाओं और संस्कृतियों का दस्तावेजीकरण आवश्यक है, जबकि उन पर निरंतर सशक्त ताकतों का दबाव बढ़ रहा है। उपन्यास को पढ़ते हुए कई बार घृणा से मन भर आता है, परन्तु यह इनका अपना विश्वास है, उनके लोक की मान्यता है; फिर शव काटने की प्रथा से जुड़े संस्कार के पीछे का वह मनोभाव महत्वपूर्ण है, जिससे वे परिचालित हैं। मनपा समाज बौद्ध धर्म में आस्था रखता है, जो करुणा केन्द्रित धर्म है। उनमें यह विश्वास है कि जीवन देने का नाम है, मौत के पश्चात् यह नश्वर देह किसी के काम आ जाए तो मौत सार्थक होगी। इसलिए बौद्ध धर्म के अनुयायी मृतकों के शव को एक सौ आठ टुकड़ों में काटकर नदी में बहा देते हैं ताकि वह जलचरों के आहार का हिस्सा बन सकें। "प्रत्येक मनपा व्यक्ति की कामना होती है कि मरने के बाद उसकी

अंत्येष्टि जमीन में दफनाकर या जलाकर न की जाएँ, उसकी लाश काटकर नदी में बहा दी जाए।"[8] इससे मृतक को पुण्य मिलता है और जो यह कर्म करता है उसे भी पुण्य की प्राप्ति होती है। पुण्य के काम के बदले दाम लेना उचित नहीं, इसलिए दारगे नरबू किसी से कुछ नहीं मांगता है।

उस समय ममेरे-फुफेरे सम्बन्धों को विवाह के लिए स्वीकृत माना जाता था। इसे भी दारगे नरबू और रिनचिन जोम्बा के हवाले से दिखाने का प्रयास हुआ है। "वर्तमान समय में ज्ञान विज्ञान के प्रचार स्वरूप अब इन रिश्तों में कमी आयी है, ज्ञान विज्ञान के परिणाम स्वरूप अब अपने समाज को बदलने की दिशा में ले जा रहे हैं।[9] दारगे नरबू की प्रेमिका रिनचिन जोम्बा कई वर्षों के पश्चात् उसके जीवन में पुन: लौटती है, जिसकी मौत की खबर से दारगे नरबू मानसिक संतुलन खो बैठा था और जिसे याद कर वह अपने वर्तमान को बिगाड़ रहा था। अचानक एक बड़ी रिम्पोछे (धार्मिक गुरु) बनकर वह उसके जीवन में पुन: लौटती है, वह अपने बचपन के प्रेम को पाकर बहुत प्रसन्न होता है पर अब उसका प्रेम धर्म के सांचे में ढलकर पवित्र हो चुका होता है। सांसारिक प्रेम का मैल आस्था की आग में उज्ज्वल स्वरूप धारण कर चुका होता है और आने सांगे नोरलजोम को धर्म के नाम पर अपनी पैतृक जमीन सौंप देती है। आने सांगे दारगे के परिवार की चिंता को अपनाते हुए उनकी विकलांग बेटी की सारी जिम्मेदारी लेकर उन्हें उसके दायित्व से मुक्त करती है। आदिवासी समाज में धर्म और आस्था की भावना बहुत प्रबल होती है। इसके निमित्त व्यक्ति अपना सर्वस्व त्यागने को तैयार रहता है। उपन्यास के अंत में फूफा लेकी, गुइसेंग्मु, आने सांगे और दारगे नरबू की भिन्न-भिन्न तरीके से मौत होती है, आउ थांपा के हाथ अपने शव का संस्कार करके जहाँ सबकी आत्मा तृप्त होती है। आने सांगे नोरलजोम भी संसार से विदाई लेती है, परन्तु वह अपने भक्तों से अपने शव का छोरतेन बनाने से मना करती है,जबकि बोद्धों में अपने धार्मिक गुरु के शरीर को भक्तों के निमित्त प्रतीक रूप में सदैव जीवित रखने की प्रथा है। आने सांगे दारगे को अपनी अंतिम इच्छा के रूप में उसके शव संस्कार की जिम्मेदारी सौंपती है। अपनी रिजोम्बा की अंतिम इच्छा को पूर्ण करता दारगे अंत में नदी की थपेड़ों में कहीं विलीन हो जाता है। गाँव के लोग समझते हैं कि दारगे का पैर फिसल गया और नदी के तेज बहाव में वह अपने को बचा नहीं पाया, जबकि दारगे कहीं और नहीं, बल्कि उसकी नियति ने जिस रिनचिन जोम्बा को उसका नहीं होने दिया था। दुनिया जहाँ उनके मिलन में व्यवधान बनी हुई

थी उसी के संग उसकी आत्मा नये सफर के लिए निकल गयी थी, जहाँ धर्म और समाज के बंधन काम नहीं करते। दारगे ने शव काटकर जो पुण्य अर्जित किया था उसमें बचा-खुचा जो पाप शेष रह गया था, आने सांगे जैसी पवित्र आत्मा के शव संस्कार के साथ दारगे जन्म मरण के बंधन से मुक्त हो गया था। दारगे और रिन्चिन रिजोम्बा के माध्यम से एक मार्मिक प्रेम कहानी का चित्रण उपन्यास में हुआ है। रिनचेन रिजोम्बा की धार्मिक काया के साथ एक सामान्य व्यक्ति के रूप में दारगे नरबू प्रेम करने में असमर्थ होता है और टूटकर प्यार करने के बावजूद वह धर्म की डोर को लांघ अपनी प्रेमिका को अपना नहीं पाता, बल्कि उसके प्रति अपनी धार्मिक निष्ठा अर्पित करता है, जो इस बात का सूचक है कि आदिवासी समाज के लिए प्रेम से बढ़कर उनकी आस्था और विश्वास हैं।

दारगे नरबू बहुत सहजता से अपना अंत स्वीकार करता है, कहीं अपनी रक्षा के लिए उसमें तड़प और छटपटाहट दिखाई नहीं देती। यह भी उसके धर्म पर गहरी आस्था को सूचित करता है जो आदिवासी समाज के खून में मौजूद है। आधुनिकता के इस दौर में भी इनके यहाँ धर्म में ऐसी आस्था बहुतों के मन को कचोट सकती है, पर यह भी सच है कि उनकी आस्थाएं करुणा से सिंचित हैं, जहाँ किसी के लिए अहितकर भाव नहीं है।

संदर्भ-सूची :

1 शव काटने वाला आदमी - येशे दोरजी थोंगछी,भूमिका से

2 शव काटने वाला आदमी - येशे दोरजी थोंगछी,पृ.सं.14

3 शव काटने वाला आदमी - येशे दोरजी थोंगछी,पृ.सं.15

4 अरुणाचल के मनपा जनजाति की संस्कृति : एक परिदृश्य,समन्वय पूर्वोत्तर- सोनम वांगमू

5 शव काटने वाला आदमी - येशे दोरजी थोंगछी,पृ.सं.60

6 अरुणाचल के मनपा जनजाति की संस्कृति : एक परिदृश्य,समन्वय पूर्वोत्तर- सोनम वांगमू

7 जन मन का धन.(सं), जनसत्ता समाचार पत्र-विजय,तरुण

8 थोंगछी,वाई,येसे.(2015).शव काटने वाला आदमी.पृ.सं.45

9 अरुणाचल के मनपा जनजाति की संस्कृति : एक परिदृश्य,समन्वय पूर्वोत्तर- सोनम वांगमू

ग्रंथ-सूची :

थोंगछी, वाई, येसे. शव काटने वाला आदमी.2015

पत्रिका के आलेख:

विजय,तरुण. (14 सितम्बर 2014)जन मन का धन.(सं).जनसत्ता समाचार पत्र.वाणी प्रकाशन

वांगमू, सोनम. (-जन -मार्च 2011).अरुणाचल के मनपा जनजाति की संस्कृति : एक परिदृश्य,समन्वय पूर्वोत्तर.दसवां अंक.केन्द्रीय हिंदी संस्थान शिलांग

संपर्क-सूत्र:
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
ई-मेल : cbhutia01@cus.ac.in

पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका